श्री शिव आरती

Shri Shiv Aarti

॥ मुख्य पद ॥

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।
Om Jai Shiv Omkara, Swami Jai Shiv Omkara,

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्धांगी धारा॥
Brahma, Vishnu, Sadashiv, Ardhangi Dhara.

ॐ जय शिव ओंकारा॥
Om Jai Shiv Omkara...

॥ पद 1 ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
Ekanan Chaturanan Panchanan Raje,

हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजे॥
Hansanan Garudasan Vrishvahan Saje.

ॐ जय शिव ओंकारा...
Om Jai Shiv Omkara...

॥ पद 2 ॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे।
Do Bhuj Char Chaturbhuj Dasbhuj Ati Sohe,

त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥
Trigun Roop Nirakhte Tribhuvan Jan Mohe.

ॐ जय शिव ओंकारा...
Om Jai Shiv Omkara...

॥ पद 3 ॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
Akshamala Vanmala Mundmala Dhari,

त्रिपुरारि कंसारि कर माला धारी॥
Tripurari Kansari Kar Mala Dhari.

ॐ जय शिव ओंकारा...
Om Jai Shiv Omkara...

॥ पद 4 ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
Shwetambar Pitambar Baghambar Ange,

सनकादिक गरूड़ादिक भूतादिक संगे॥
Sanakadik Garudadik Bhutadik Sange.

ॐ जय शिव ओंकारा...
Om Jai Shiv Omkara...

॥ पद 5 ॥

कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी।
Kamandalu Chakra Trishul Dhari,

सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी॥
Sukhkari Dukhari jaghpalan kari

ॐ जय शिव ओंकारा॥
Om Jai Shiv Omkara...

जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता॥
Jagkarta Jagbharta Jagsanhaarkarta.

ॐ जय शिव ओंकारा॥
Om Jai Shiv Omkara...

॥ पद 6 ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
Brahma Vishnu Sadashiv Janat Aviveka,

प्रणवाक्षर मध्ये ये तीनों एका॥
Pranavakshar madhya Ye Tino Eka.

ॐ जय शिव ओंकारा...
Om Jai Shiv Omkara...

लक्ष्मी व सावित्री पार्वती संगा।
Lakshmi Vah Savirtri Parvati Sangha

पार्वती अर्द्धांगी,शिवलहरी गंगा॥
Parvati Ardhangni,Shivlahri Ganga

ॐ जय शिव ओंकारा॥
Om Jai Shiv Omkara...

पर्वत सोहैं पार्वती, शंकर कैलासा।
Parvat Saho Parvati, Shankar Kailasha

भांग धतूर का भोजन, भस्मी में वासा॥
Bhang Dhatur Ka bhojan, bhasmi mai vaasa

ॐ जय शिव ओंकारा॥
Om Jai Shiv Omkara...

जटा में गंगा बहत है,गल मुण्डन माला।
Jata mai ganga bahat mundan mala

शेष नाग लिपटावत,ओढ़त मृगछाला॥
Sesh naag liptavat, odhat mrigchala

ॐ जय शिव ओंकारा॥
Om Jai Shiv Omkara...

॥ आरती फल ॥

काशी में विराजे विश्वनाथ,नन्दी ब्रह्मचारी।
-

नित उठ दर्शन पावत,महिमा अति भारी॥
Nit uth darshan pavat, mahima ati bhari

ॐ जय शिव ओंकारा॥
Om Jai Shiv Omkara...

त्रिगुणस्वामी जी की आरती जो कोइ नर गावे।
Trigunswami ji ki aarti jo koi nar gaave

कहत शिवानन्द स्वामी,मनवाञ्छित फल पावे॥
Kahat shivanand swami, manvanchit fhal paave

ॐ जय शिव ओंकारा॥
Om Jai Shiv Omkara...